



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मखाना खेती की मुख्य समस्याएँ एवं निदान

*डॉ. सुनील कुमार मंडल

सहायक प्राध्यापक, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, झंझारपुर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर, बिहार, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: skmandal6464@gmail.com

बिहार में मखाना की खेती मुख्य रूप से पारंपरिक प्रणालियों (जैसे तालाबों, झीलों और गहरे गड्ढों) में की जाती है। यह एक अत्यधिक श्रम-प्रधान (labour-intensive) प्रक्रिया है, जिसमें आधुनिक मशीनीकरण की भारी कमी है। फसल कटाई के दौरान किसानों को पानी में रहकर अत्यधिक कठिन परिश्रम करना पड़ता है, जिससे उनके स्वास्थ्य को गंभीर जोखिम रहता है। देश के कुल मखाना उत्पादन का 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बिहार के मधुबनी और कटिहार जिलों से आता है। हालांकि, इन क्षेत्रों में तालाब या भूमि के मालिकाना हक की कमी, तकनीकी जानकारी का अभाव और उन्नत बीजों की अनुपलब्धता के कारण किसानों की उत्पादकता और आय दोनों सीमित रह जाती हैं।

मखाना खेती की प्रमुख समस्याएँ

1. श्रम-प्रधान और थकाऊ प्रक्रिया

- मखाना की खेती (विशेषकर तालाब प्रणाली में) फसल कटाई के समय बेहद कष्टदायक होती है।
- किसानों को 4 से 6 फीट गहरे पानी में लंबे समय तक खड़े रहकर काम करना पड़ता है।
- इसके कारण उन्हें त्वचा और स्वास्थ्य संबंधी अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा हमेशा बना रहता है।

2. मशीनीकरण की कमी

- मखाना के बीज निकालने और उनके प्रसंस्करण में आज भी सदियों पुराने पारंपरिक तरीकों का उपयोग किया जा रहा है।
- आधुनिक मशीनों के अभाव के कारण समय और लागत (श्रम खर्च) दोनों बहुत अधिक लगते हैं।

3. पूंजी और निवेश की कमी

- बिहार के छोटे और सीमांत किसानों के पास खेती के लिए स्वयं के तालाब नहीं हैं।
- वे पूरी तरह से पट्टे (लीज/भाड़े) पर निर्भर रहते हैं, जिससे उनका लाभ मार्जिन कम हो जाता है और वे बड़ा निवेश नहीं कर पाते।

4. गुणवत्तापूर्ण बीज और तकनीकी ज्ञान का अभाव

- अधिकतर किसानों तक मखाना के प्रमाणित और उन्नत बीजों की पहुंच बहुत सीमित है।
- उन्हें वैज्ञानिक और आधुनिक खेती के तरीकों का उचित ज्ञान नहीं मिल पाता है।

5. कीट, रोग और खरपतवार का प्रकोप

- एक ही जगह पर लगातार सघन खेती (intensive farming) करने से फसल में विभिन्न प्रकार के कीटों और बीमारियों का खतरा बढ़ गया है, जिससे पैदावार घट जाती है।
- फसल के शुरुआती दिनों में जलीय खरपतवारों का प्रकोप भी तेजी से बढ़ता है, जो मखाने के विकास को रोकता है।

6. जलवायु संवेदनशीलता

- मौसम में अनियंत्रित बदलाव, अनियमित वर्षा, बाढ़ और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण मखाने की फसल पर बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7. विपणन और बिचौलियों की समस्या

- मखाना बाजार में बिचौलियों की हिस्सेदारी बहुत अधिक है।
- इसके कारण अपनी कड़ी मेहनत की उपज का सही और उचित मूल्य सीधे किसानों को नहीं मिल पाता है।

संभावित समाधान और निदान

- आधुनिक मशीनीकरण :** मखाना की कटाई, पानी से बीज निकालने और प्रसंस्करण की पूरी प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए नई और किफायती आधुनिक मशीनों का विकास व वितरण किया जाना चाहिए।
- सहकारी खेती :** छोटे किसानों को एकजुट करके किसान समूहों या सहकारी समितियों का गठन करना चाहिए, जिससे वे सीधे बाजार से जुड़ सकें और बिचौलियों से बच सकें।
- मत्स्य पालन के साथ एकीकरण :** मखाना के तालाबों में मखाने के साथ-साथ मछली पालन (मिश्रित खेती) को बढ़ावा दिया जाए, जिससे किसानों को एक ही लागत में दोहरी आय प्राप्त हो सके।
- उन्नत किस्मों का उपयोग :** किसानों को 'स्वर्ण वैदेही' या 'सबौर मखाना-1' जैसी उन्नत किस्मों के उपयोग के लिए प्रेरित किया जाए। ये किस्में अधिक उत्पादकता देने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन (बाढ़/तापमान) के प्रति भी सहनशील हैं।
- आधुनिक खेत प्रणाली का उपयोग :** वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई आधुनिक 'खेत अत्यंत सरल है और इसमें तालाब की जगह सामान्य खेतों में पानी लगाकर मखाना उगाया जाता है। इससे मेहनत कम होती है और किसान एक ही खेत में साल में दो फसलें (जैसे मखाना के बाद गेहूं या धान) ले सकते हैं, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

निष्कर्ष

यदि मखाना उत्पादन में आ रही उपरोक्त समस्याओं का सही समय पर तकनीकी और प्रशासनिक स्तर पर निवारण किया जाए, तो बिहार के किसानों को न केवल गुणवत्तापूर्ण और अधिक उत्पादन प्राप्त होगा, बल्कि उनकी कुल शुद्ध आय में भी भारी बढ़ोतरी दर्ज की जाएगी।